

धीरे-धीरे उत्तर अतिज से

प्रश्न: महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'धीरे-धीरे उत्तर अतिज से'
कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

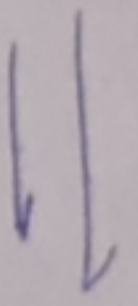
उत्तर:
— प्रस्तुत कविता महादेवी वर्मा द्वारा रचित है। महादेवी
जी कायावाद की एक मजबूत समर्थक हैं। उनकी इस
कविता में वसंत ऋतु की रात्रि की प्राकृतिक सुषमा का
बड़ा सुंदर और स्वाभिमूक चित्रण हुआ है। कवियत्री
कहती हैं — हे वसंत की रात्रि तुम आकाश से
पृथ्वी पर धीरे-धीरे उतर कर आओ, तुम्हारी
वेणी में तारों से मोती जड़े हैं, चंद्रमा का अनुपम
शीशफूल तुम्हें सुशोभित कर रहे हैं, किरणों की
चुड़ियाँ तुमने धारण कर रखी हैं और सखी
शुभ्र मेघों का वस्त्र धारण किया है। अतः —
तुमसे मेरा अनुरोध है कि तम नेत्रों से ~~अपने~~
आँसु के सुंदर मोती बिखेरती हुयी एक को
पुलकित करती हुई आओ।

आगे वसन्त रजनी को संबोधित करती
हुयी कवियत्री कहती हैं — मत्तों की मर्मर ध्वनि
ही तुम्हारी मधुरों की मधुर ध्वनि है और तुमने
भ्रमरों से गुंजित कमलों की किंकणी धारण कर
रखी है। अतः मँद-मँद बहती हुयी सरिता की
मँद चाल अपने पैरों से धारण कर, अपनी
मधुर-मुस्कान से पिखली हुयी चाँदी के समान
चाँदनी बिखेरती हुयी और खिलखिलती हुयी
मेरे पास आओ।

कवियत्री कह रही है कि हे वसन्त की रात्रि
पुलकित कर देने वाले स्वप्न ही तुम्हारी रोमा-
बती है और हाथों के मधुर रसतिगों के लिए
दूर, मलय पवन के चंचल कुपट्टे को धारण
कर तुम नीली छाया के समान फैली हुयी संसार
से अभिखार के लिए सुज्जित होकर आओ।

कविगर्भी प्रभातकालीन सौंदर्य का चित्रण करते हुए कहती हैं कि नदी के रुद्रग में लहरों की खिहरन होने लगी है, मकरंद पुष्प खिल रहे हैं तथा न केवल प्रत्येक अणु विभोर है अपितु चरती भी प्रिय के आठामन के को आहत सुमकर पुलकित की उठी है। इतलिय के वसंत! तुम खिहरती दुग्गी आओ।

यदि प्रस्तुत पैदियों में मानवीकरण की साहायता से वसंत रजनी की अतिसावित्र की नायिका बनाकर प्रस्तुत किया गया है। यहाँ वा मणिबता व वि शेषण विपरीत भाति, न सुंदर सुगौरा हुआ है। इसमें यिदेह नहीं कि यह भी व्याभावादी मीली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ कोमल, मधुर, चिंचामक शकों के प्रयोग द्वारा रात्रिचालीन वसंत का अति सुन्दर चित्र उपस्थित हुआ है। वस्तुतः महादेवी जी ने वसंत रजनी को अभिस्त्राविका नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। इसे प्रकृति के विविध रूप प्रदान करते हुए आभरण से सुसज्जित किया है। अतः इस गीत में वसंत वैभव का उपभुक्त परिचय मिल जाता है। यहाँ कविगर्भी ने प्रकृति का मानवीकरण करके प्रकृति-चित्रण का एक अनूठा रूप प्रस्तुत किया है।



U. G. (Hindi Honrs)
B. A. Part II
" Uttar Khatig se "